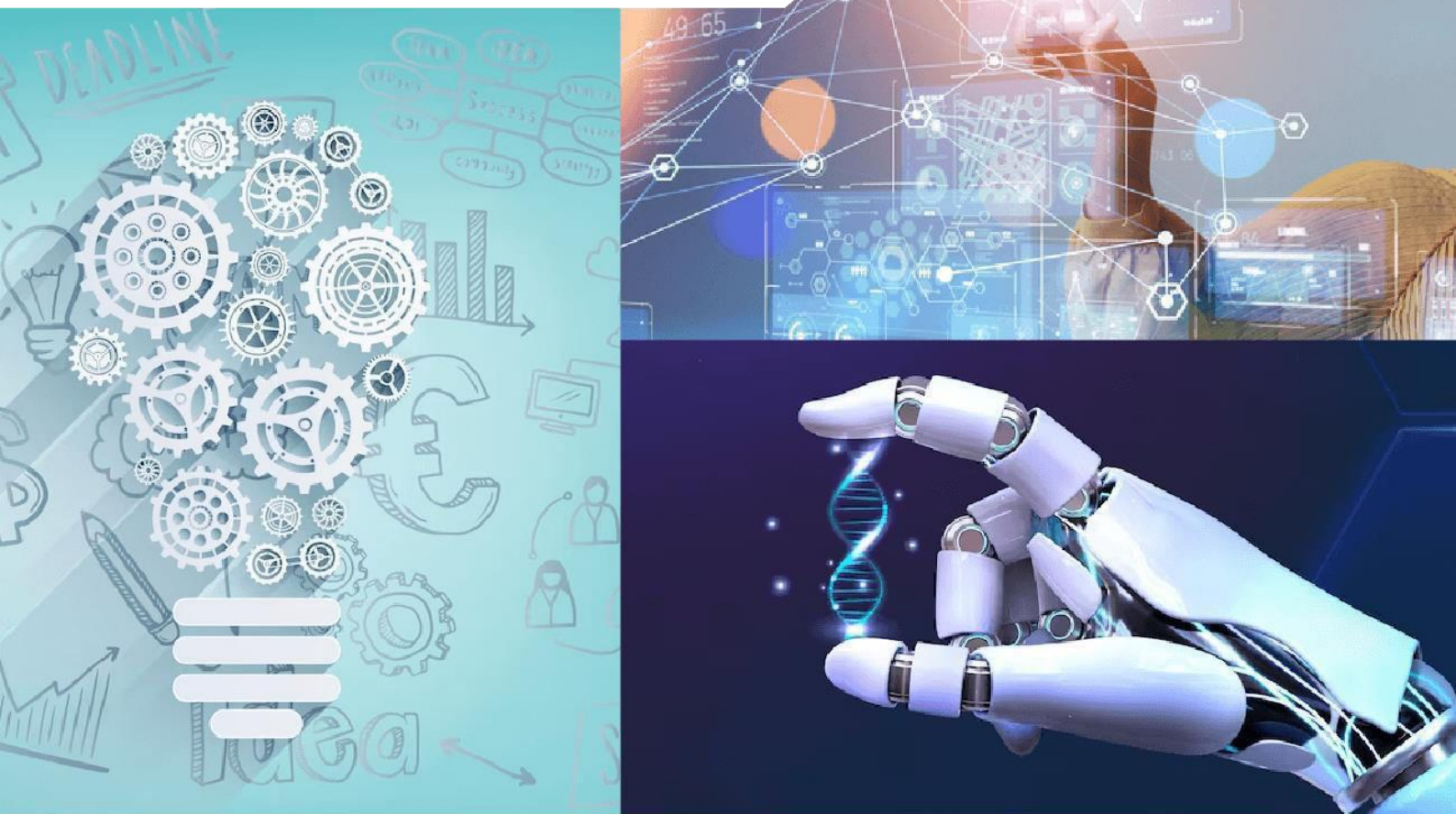




International Journal of Advanced Research in Education and Technology (IJARETY)

Volume 12, Issue 6, November-December 2025

Impact Factor: 8.152



गांधी जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में उपादेयता

Anurag Singh, Dr. Madhu Yadav

Research Scholar, Department of Education, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

Assistant Professor, Department of Education, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

सारांश: महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का भारतीय चिंतन परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमें शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम माना गया है। इस दृष्टिकोण में शिक्षा केवल बौद्धिक उन्नति तक सीमित न होकर जीवन के व्यावहारिक, नैतिक और सामाजिक पक्षों को भी समान महत्व प्रदान करती है। गांधी जी ने शिक्षा को आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा, सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ते हुए इसे जीवनोपयोगी बनाने पर बल दिया। उनके विचारों में कार्य-आधारित अधिगम, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप ज्ञानार्जन को विशेष स्थान प्राप्त है।

समकालीन शिक्षा व्यवस्था अनेक प्रकार की चुनौतियों से घिरी हुई है, जिनमें मूल्यहीनता, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण, तथा व्यावहारिक जीवन से शिक्षा का विच्छेद प्रमुख हैं। ऐसी स्थिति में गांधीवादी शैक्षिक चिंतन एक संतुलित और मानवीय दृष्टि प्रस्तुत करता है, जो शिक्षा को केवल रोजगार का साधन न मानकर जीवन निर्माण का आधार मानता है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जो आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजग, नैतिक रूप से सुदृढ़ और मानवीय संवेदनाओं से युक्त हो।

गांधीवादी शिक्षा में निहित सिद्धांत वर्तमान समय में भी प्रासंगिकता बनाए रखते हैं, विशेषतः तब जब शिक्षा को जीवन, समाज और प्रकृति के साथ समन्वित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा अधिक उपयोगी, सार्थक और समावेशी बन सकती है, जो न केवल व्यक्ति के विकास में सहायक होती है, बल्कि समाज में संतुलन, सहयोग और स्थायित्व को भी सुदृढ़ करती है।

मुख्य शब्द: गांधीवादी शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, मूल्य शिक्षा, आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण, समकालीन शिक्षा।

I. प्रस्तावना

आधुनिक समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन भर नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रमुख आधार बन चुकी है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल बौद्धिक रूप से विकसित होता है, बल्कि उसके व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और जीवन मूल्यों का भी निर्माण होता है। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, जहाँ डिजिटल माध्यम, प्रतिस्पर्धा और कौशल विकास को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। तथापि, इस परिवर्तनशील परिदृश्य में शिक्षा के मूल उद्देश्यों, विशेषकर नैतिकता, मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्षों की उपेक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

आज की शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान को अधिकतर परीक्षा और रोजगार से जोड़कर देखा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना जैसे गुणों का विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पाता। विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना तो बढ़ती है, किन्तु सहयोग, सहानुभूति और नैतिकता जैसे मूल्यों का हास होता जा रहा है। शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण भी एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है, जहाँ शिक्षा सेवा न होकर एक उत्पाद के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शैक्षिक असमानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच तथा व्यावहारिक ज्ञान की कमी जैसी समस्याएँ भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

ऐसी परिस्थितियों में महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन एक वैकल्पिक और सार्थक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। गांधी जी ने शिक्षा को जीवन के साथ जोड़ते हुए इसे केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसा नागरिक तैयार करना होना चाहिए जो आत्मनिर्भर, नैतिक रूप से सुदृढ़ और सामाजिक दृष्टि से उत्तरदायी हो। उन्होंने शिक्षा में श्रम, उत्पादन और व्यावहारिक अनुभव को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह जीवनोपयोगी हो।

गांधीवादी शिक्षा का मूल स्वरूप व्यक्ति को समाज और प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करना सिखाता है। इसमें शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं, सांस्कृतिक परंपराओं और वास्तविक जीवन परिस्थितियों के अनुरूप विकसित करने पर बल दिया गया है। मातृभाषा में शिक्षण, कार्य-आधारित अधिगम और स्वावलंबन के सिद्धांत इस दर्शन के प्रमुख आधार हैं, जो आज भी शिक्षा को

अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने की क्षमता रखते हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में जब शिक्षा के उद्देश्यों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब गांधी जी के शैक्षिक विचार एक मार्गदर्शक के रूप में उभरते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा को मानवीय मूल्यों से जोड़ता है, बल्कि इसे समाज के व्यापक विकास का साधन भी बनाता है। अतः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य गांधी जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उनके विचार आज की शिक्षा प्रणाली को किस प्रकार अधिक सार्थक, समावेशी और जीवनोपयोगी बना सकते हैं।

II. गांधी जी का शैक्षिक दर्शन: मूल आधार

महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन भारतीय जीवन-दृष्टि, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक समग्र विचार प्रणाली के रूप में सामने आता है। उन्होंने शिक्षा को केवल साक्षरता या बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं माना, बल्कि इसे व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के संतुलित एवं समन्वित विकास का माध्यम बताया। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के भीतर निहित श्रेष्ठ गुणों को विकसित करना है, जिससे वह एक जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और नैतिक रूप से सुदृढ़ नागरिक बन सके। इस दृष्टि में शिक्षा का संबंध जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है, न कि केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित। गांधी जी के शैक्षिक दर्शन का मूल आधार सत्य और अहिंसा जैसे सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत हैं। सत्य को उन्होंने जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना और शिक्षा के माध्यम से इसे आत्मसात करने पर बल दिया। अहिंसा के माध्यम से उन्होंने प्रेम, सहिष्णुता और सहयोग की भावना को विकसित करने की बात कही। इस प्रकार उनका शैक्षिक दृष्टिकोण केवल ज्ञान प्रदान करने का नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण का साधन है। उनका विश्वास था कि जब तक शिक्षा नैतिक मूल्यों से जुड़ी नहीं होगी, तब तक वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन नहीं ला सकती।

गांधी जी ने शिक्षा को आत्मनिर्भरता के साथ भी गहराई से जोड़ा। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अपने जीवनयापन के लिए सक्षम बनाए। इस संदर्भ में उन्होंने श्रम की गरिमा पर विशेष बल दिया और यह माना कि शारीरिक श्रम को शिक्षा का अभिन्न अंग होना चाहिए। उनका यह दृष्टिकोण उस समय की औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के विपरीत था, जो मुख्यतः नौकरी-उन्मुख और सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित थी। गांधी जी चाहते थे कि शिक्षा व्यक्ति को उत्पादनशील बनाए और उसे अपने परिवेश के अनुरूप कौशल प्रदान करे। उनके शैक्षिक दर्शन में मातृभाषा को शिक्षण का प्रमुख माध्यम माना गया है। उनका विश्वास था कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थी विषय को अधिक गहराई से समझ सकता है और अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। इसके अतिरिक्त, मातृभाषा में शिक्षा से सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का संरक्षण भी संभव होता है। इस प्रकार गांधी जी ने शिक्षा को स्थानीय संदर्भों और सांस्कृतिक आधार से जोड़ने का प्रयास किया।

गांधी जी ने शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना या प्रमाणपत्र प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाना चाहिए। इस दृष्टि से उन्होंने अनुभवात्मक अधिगम और कार्य-आधारित शिक्षण को महत्व दिया। उनका मानना था कि जब विद्यार्थी स्वयं करके सीखता है, तब उसका ज्ञान अधिक स्थायी और उपयोगी होता है। इसके अतिरिक्त, गांधी जी के शैक्षिक दर्शन में सामाजिक समानता और न्याय का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने शिक्षा को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया और यह माना कि शिक्षा के माध्यम से ही सामाजिक असमानताओं को दूर किया जा सकता है। उनका यह दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा की अवधारणा के अनुरूप है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्रदान किया जाता है।

गांधी जी के विचारों में शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान भी है। उन्होंने शिक्षा को समाज सेवा और सामुदायिक विकास से जोड़ते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षित व्यक्ति को अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए। इस प्रकार उनका शैक्षिक दर्शन व्यक्ति और समाज के बीच एक सशक्त संबंध स्थापित करता है। गांधी जी का शैक्षिक दर्शन एक संतुलित, मानवीय और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि जीवन निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है, जिसमें नैतिकता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्रीय स्थान प्राप्त है।

III. बुनियादी शिक्षा की संरचना और सिद्धांत

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा की अवधारणा भारतीय शिक्षा दर्शन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक है। यह शिक्षा प्रणाली केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसे जीवन, श्रम और समाज के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया था। बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य ऐसा शिक्षण मॉडल विकसित करना था, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए, उसकी सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करे और उसे समाज के प्रति उत्तरदायी बनाए। इस शिक्षा प्रणाली की संरचना अत्यंत व्यावहारिक और जीवनोपयोगी सिद्धांतों पर आधारित थी, जो आज भी शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

बुनियादी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत कार्य-आधारित अधिगम है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा को किसी उत्पादक कार्य के माध्यम से प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत हस्तशिल्प, कृषि, कताई-बुनाई जैसे कार्यों को शिक्षा का केंद्र बनाया गया, ताकि विद्यार्थी सीखने के साथ-साथ उत्पादन की प्रक्रिया से भी जुड़ सकें। इस प्रकार शिक्षा केवल बौद्धिक अभ्यास न रहकर एक जीवंत और सक्रिय प्रक्रिया बन जाती है। कार्य के माध्यम से सीखने से विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है और वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर होते हैं।

इस शिक्षा प्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें ज्ञान और कौशल का समन्वय किया गया है। गांधी जी ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें व्यावहारिक कौशल का भी समावेश होना चाहिए। जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करता है, तो वह न केवल उस कार्य को समझता है, बल्कि उससे जुड़े वैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को भी जान पाता है। इस प्रकार शिक्षा अधिक सार्थक और उपयोगी बनती है। बुनियादी शिक्षा में मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने पर विशेष जोर दिया गया। गांधी जी का मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थी विषयवस्तु को अधिक गहराई से समझ सकता है और अपनी अभिव्यक्ति को सहज रूप में प्रस्तुत कर सकता है। इससे शिक्षा अधिक प्रभावी और सर्वसुलभ बनती है। साथ ही, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण से स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण भी संभव होता है, जो किसी भी समाज की पहचान का महत्वपूर्ण अंग है।

इस शिक्षा प्रणाली में स्वावलंबन का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। गांधी जी चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाए। इसके लिए उन्होंने उत्पादन-आधारित शिक्षा का समर्थन किया, जिसमें विद्यार्थी अपने कार्य के माध्यम से कुछ उत्पादन कर सकें और उससे आय अर्जित कर सकें। इस प्रकार शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि जीवनयापन के साधन भी उपलब्ध कराती है। यह दृष्टिकोण आज के समय में कौशल विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। बुनियादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत शिक्षा और जीवन के एकीकरण पर आधारित है। गांधी जी ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ा जाना चाहिए। विद्यार्थी को केवल पुस्तकें पढ़ाकर नहीं, बल्कि उसे समाज, प्रकृति और परिवेश के साथ जोड़कर शिक्षित किया जाना चाहिए। इससे उसका ज्ञान अधिक व्यावहारिक और उपयोगी बनता है। शिक्षा और जीवन के इस समन्वय से व्यक्ति में वास्तविक समस्याओं को समझने और उनके समाधान की क्षमता विकसित होती है। इसके अतिरिक्त, बुनियादी शिक्षा में नैतिक और सामाजिक मूल्यों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण भी होना चाहिए। इसलिए इस शिक्षा प्रणाली में सत्य, अहिंसा, सहयोग, अनुशासन और सेवा जैसे मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ा गया। इससे विद्यार्थी एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित होता है। बुनियादी शिक्षा की संरचना एक ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रस्तुत करती है, जो व्यक्ति के बौद्धिक, व्यावहारिक, नैतिक और सामाजिक विकास को समान रूप से महत्व देती है। यह शिक्षा को जीवन के साथ जोड़ती है और उसे अधिक उपयोगी, प्रभावी और सार्थक बनाती है। वर्तमान समय में जब शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख बनाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब गांधी जी की बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक सिद्ध होते हैं।

IV. गांधीवादी शिक्षा के उद्देश्य

गांधीवादी शिक्षा के उद्देश्य पारंपरिक शिक्षा दृष्टिकोण से भिन्न और अधिक व्यापक हैं, जिनमें केवल ज्ञानार्जन या बौद्धिक विकास ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण प्रमुख लक्ष्य माना गया है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को जीवन निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखा और इसके माध्यम से ऐसे समाज की कल्पना की, जो नैतिक, आत्मनिर्भर और सहयोगात्मक मूल्यों पर आधारित हो। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल योग्य बनाना नहीं, बल्कि उसे एक सच्चा, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाना है।

गांधीवादी शिक्षा का प्रथम और प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर संतुलित विकास को महत्व दिया गया है। गांधी जी का मानना था कि यदि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित रह जाती है, तो वह अधूरी है। इसलिए उन्होंने शारीरिक श्रम, व्यावहारिक अनुभव और नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया। इससे व्यक्ति न केवल ज्ञानवान बनता है, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित और सक्षम भी होता है।

दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य नैतिक और आध्यात्मिक विकास है। गांधी जी के विचारों में सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा जैसे मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से इन मूल्यों को व्यक्ति के जीवन में स्थापित किया जाना चाहिए। जब व्यक्ति नैतिक रूप से सुदृढ़ होता है, तभी वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। इस प्रकार गांधीवादी शिक्षा व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है, जो किसी भी समाज के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है। गांधीवादी शिक्षा का एक अन्य प्रमुख उद्देश्य सामाजिक उत्तरदायित्व और सेवा भावना का विकास करना है। गांधी जी ने शिक्षा को समाज से जोड़ते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षित व्यक्ति को अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए। उन्होंने सहयोग, सहानुभूति और

परोपकार की भावना को विकसित करने पर बल दिया। इस दृष्टिकोण से शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं रहती, बल्कि सामाजिक विकास का माध्यम भी बन जाती है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता भी गांधीवादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। गांधी जी चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो, जो व्यक्ति को अपने जीवनयापन के लिए सक्षम बनाए। उन्होंने श्रम और उत्पादन को शिक्षा के साथ जोड़कर यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि व्यावहारिक कौशल भी अर्जित करें। इससे व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है और समाज पर उसकी निर्भरता कम होती है। वर्तमान समय में जब बेरोजगारी एक बड़ी समस्या के रूप में उभर रही है, तब यह उद्देश्य अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। गांधीवादी शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना है। गांधी जी ने शिक्षा को ऐसे नागरिक तैयार करने का माध्यम माना, जो स्वतंत्र विचारों वाले, जिम्मेदार और समाज के प्रति जागरूक हों। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में सहिष्णुता, समानता और न्याय की भावना विकसित होती है, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। इस प्रकार गांधीवादी शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञानवान नहीं बनाती, बल्कि उसे एक जागरूक और सक्रिय नागरिक भी बनाती है।

इसके अतिरिक्त, गांधीवादी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को प्रकृति और समाज के साथ संतुलन स्थापित करने की दिशा में प्रेरित करना भी है। उन्होंने सादगी, संतुलन और प्राकृतिक जीवनशैली को महत्व दिया, जो आज के पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से यदि व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जाए, तो सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।

v. वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रमुख समस्याएँ

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहाँ एक ओर तकनीकी विकास और वैश्वीकरण ने नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर अनेक गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में कई ऐसे अंतर्विरोध दिखाई देते हैं, जो इसके मूल उद्देश्यों को प्रभावित करते हैं। इन समस्याओं का प्रभाव केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उनके व्यक्तित्व, नैतिक दृष्टिकोण और सामाजिक व्यवहार पर भी पड़ता है। सबसे प्रमुख समस्या शिक्षा में रोजगारोन्मुखता का अभाव है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अधिकतर पाठ्यक्रम सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित हैं, जिनका वास्तविक जीवन और रोजगार के अवसरों से सीधा संबंध नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी व्यावहारिक कौशलों से वंचित रह जाते हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या बढ़ती है। शिक्षा और रोजगार के बीच यह असंतुलन आज की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

दूसरी महत्वपूर्ण समस्या नैतिक मूल्यों का हास है। आधुनिक शिक्षा में ज्ञान और तकनीकी दक्षता पर तो जोर दिया जाता है, किन्तु नैतिकता, चरित्र निर्माण और मानवीय संवेदनाओं को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता। इसके कारण विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना तो विकसित होती है, लेकिन सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास कम होता है। यह स्थिति समाज में नैतिक संकट को जन्म देती है, जो दीर्घकालिक रूप से सामाजिक असंतुलन का कारण बन सकती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में रटत पद्धति का भी व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। विद्यार्थी विषयवस्तु को समझने के बजाय उसे याद करने पर अधिक ध्यान देते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन क्षमता प्रभावित होती है। परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली इस प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ावा देती है, जहाँ ज्ञान का मूल्यांकन केवल अंकों के आधार पर किया जाता है। इससे शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य, अर्थात् ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग और समझ, पीछे छूट जाता है।

शिक्षा का व्यवसायीकरण भी एक गंभीर समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। निजी शैक्षणिक संस्थानों की बढ़ती संख्या और उच्च शुल्क संरचना के कारण शिक्षा अब एक सेवा न होकर एक उत्पाद के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। इससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग तक सीमित हो जाती है, जबकि वंचित वर्ग के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो जाता है। यह स्थिति सामाजिक असमानता को और अधिक बढ़ावा देती है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शैक्षिक असमानता भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ आधुनिक सुविधाएँ, प्रशिक्षित शिक्षक और बेहतर संसाधन उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में इनका अभाव देखा जाता है। इस कारण ग्रामीण विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह असमानता न केवल शैक्षिक स्तर पर, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास पर भी प्रभाव डालती है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षा और जीवन के बीच बढ़ती दूरी भी एक गंभीर चिंता का विषय है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पढ़ाई जाने वाली सामग्री का वास्तविक जीवन की समस्याओं से कम संबंध होता है। इससे विद्यार्थी सैद्धांतिक ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु उसे व्यवहार में लागू करने की क्षमता विकसित नहीं कर पाते। शिक्षा का यह स्वरूप व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन के लिए पूरी तरह तैयार नहीं कर पाता। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली अनेक संरचनात्मक और मूल्यगत समस्याओं से जूझ रही है। ये समस्याएँ न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी बाधा उत्पन्न करती हैं। ऐसी स्थिति में एक

वैकल्पिक और संतुलित शिक्षा दृष्टिकोण की आवश्यकता महसूस होती है, जो शिक्षा को जीवन, नैतिकता और समाज के साथ पुनः जोड़ सके। यही वह संदर्भ है, जहाँ गांधीवादी शैक्षिक विचार एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरते हैं।

VI. समकालीन परिप्रेक्ष्य में गांधीवादी शिक्षा की उपादेयता

समकालीन युग में शिक्षा केवल ज्ञान के प्रसार का माध्यम न रहकर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार बन चुकी है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और बदलती जीवनशैली के कारण शिक्षा की भूमिका और अपेक्षाएँ निरंतर परिवर्तित हो रही हैं। ऐसे परिवेश में जब शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों से जूझ रही है, तब गांधीवादी शिक्षा का दृष्टिकोण एक सार्थक और संतुलित मार्ग प्रस्तुत करता है। गांधी जी के शैक्षिक विचार आज भी इसीलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे शिक्षा को जीवन, समाज और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ते हैं।

वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता अत्यधिक महसूस की जा रही है। समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, स्वार्थपरता और नैतिक पतन के कारण शिक्षा के उद्देश्य पर पुनर्विचार करना आवश्यक हो गया है। गांधीवादी शिक्षा में सत्य, अहिंसा, सहयोग और सहिष्णुता जैसे मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया गया है, जो आज के समाज में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। यदि शिक्षा में इन मूल्यों का समावेश किया जाए, तो विद्यार्थी केवल ज्ञानवान ही नहीं, बल्कि नैतिक रूप से सुदृढ़ भी बन सकते हैं। कौशल विकास और रोजगार के संदर्भ में भी गांधीवादी शिक्षा अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशलों का अभाव रह जाता है। गांधी जी ने कार्य-आधारित शिक्षा पर जोर देते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षा को उत्पादन और श्रम से जोड़ना चाहिए। यह दृष्टिकोण आज के समय में कौशल विकास, उद्यमिता और स्वरोजगार को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है। विशेष रूप से “आत्मनिर्भर भारत” की अवधारणा के संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं, क्योंकि वे व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सक्षम बनाने पर बल देते हैं।

शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण की आवश्यकता भी आज पहले से अधिक बढ़ गई है। आधुनिक शिक्षा में जहाँ तकनीकी दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता पर जोर दिया जाता है, वहीं नैतिक मूल्यों को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता। गांधीवादी शिक्षा इस कमी को दूर करने में सक्षम है, क्योंकि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में जिम्मेदारी, अनुशासन और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास संभव है। समकालीन समाज में सतत विकास की अवधारणा भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। पर्यावरणीय संकट, संसाधनों का अधाधुंध दोहन और असंतुलित विकास ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विकास का मॉडल अधिक संतुलित और प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए। गांधीवादी शिक्षा में सादगी, संतुलन और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर बल दिया गया है, जो सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इस प्रकार गांधी जी के विचार आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, गांधीवादी शिक्षा समावेशी शिक्षा की अवधारणा को भी मजबूत बनाती है। यह शिक्षा को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने और समान अवसर प्रदान करने पर बल देती है। वर्तमान समय में जब सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ बढ़ रही हैं, तब यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक न्यायपूर्ण और सर्वसुलभ बनाने में सहायक हो सकता है। डिजिटल युग में भी गांधीवादी शिक्षा का महत्व कम नहीं होता, बल्कि यह और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। तकनीकी साधनों के बढ़ते उपयोग के साथ यह आवश्यक है कि शिक्षा में मानवीय मूल्यों और नैतिकता का संतुलन बना रहे। गांधीवादी शिक्षा इस संतुलन को बनाए रखने का मार्ग प्रदान करती है, जिससे तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं का संरक्षण भी संभव हो सके। समकालीन परिप्रेक्ष्य में गांधीवादी शिक्षा की उपादेयता बहुआयामी है। यह शिक्षा को केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे जीवन, समाज और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों के समाधान के रूप में गांधीवादी शिक्षा एक प्रभावी और दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो शिक्षा को अधिक सार्थक, संतुलित और मानवोन्मुख बना सकती है।

VII. शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण की भूमिका

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना भी है। नैतिकता और चरित्र निर्माण किसी भी समाज की स्थिरता, समृद्धि और संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक तत्व हैं। यदि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित रह जाए और उसमें नैतिक मूल्यों का समावेश न हो, तो वह समाज के लिए सकारात्मक परिणाम देने में असमर्थ हो जाती है। इस दृष्टि से शिक्षा और नैतिकता का संबंध अत्यंत गहरा और अविभाज्य है।

आधुनिक समाज में नैतिक संकट एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। तेजी से बदलती जीवनशैली, भौतिकवाद की बढ़ती प्रवृत्ति और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के कारण व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का हास देखा जा रहा है। स्वार्थ, असहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी जैसी समस्याएँ समाज में असंतुलन उत्पन्न कर रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा का दायित्व और

अधिक बढ़ जाता है कि वह केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न रहे, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक चेतना का भी विकास करे। गांधीवादी दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा और सहिष्णुता जैसे मूल्य व्यक्ति के जीवन को दिशा प्रदान करते हैं और उसे एक आदर्श नागरिक बनने में सहायक होते हैं। जब शिक्षा इन मूल्यों को आत्मसात करने का माध्यम बनती है, तब व्यक्ति के भीतर आत्मअनुशासन, ईमानदारी और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि सामाजिक संबंधों को भी सुदृढ़ करती है।

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा का योगदान बहुआयामी होता है। विद्यालय केवल ज्ञान देने का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक प्रशिक्षण का केंद्र भी होता है। शिक्षक इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे विद्यार्थियों के लिए आदर्श और मार्गदर्शक होते हैं। उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और शिक्षण पद्धति का विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं, तो विद्यार्थी भी उनसे प्रेरणा लेकर उन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं। शिक्षा के माध्यम से नैतिकता का विकास केवल सैद्धांतिक शिक्षा से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यावहारिक अनुभव और जीवन से जुड़ी गतिविधियों का समावेश आवश्यक है। समूह कार्य, सामाजिक सेवा, सामुदायिक सहभागिता और सहयोगात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग और जिम्मेदारी की भावना को विकसित करती हैं। इस प्रकार शिक्षा एक सक्रिय और अनुभवात्मक प्रक्रिया बन जाती है, जो व्यक्ति के चरित्र को सुदृढ़ करने में सहायक होती है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षा में नैतिकता का समावेश सामाजिक सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। जब व्यक्ति नैतिक रूप से सुदृढ़ होता है, तो वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। वह अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहता है और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को समझता है। इस प्रकार नैतिक शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। वर्तमान समय में जब शिक्षा प्रणाली में प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दक्षता पर अधिक जोर दिया जा रहा है, तब नैतिकता और चरित्र निर्माण के पक्ष को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यदि शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समुचित समावेश किया जाए, तो यह न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को संतुलित बनाएगी, बल्कि समाज को भी अधिक मानवीय और समन्वित बनाएगी।

समग्र रूप से शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम न बनाकर जीवन निर्माण की प्रक्रिया में परिवर्तित करती है। गांधीवादी दृष्टिकोण इस दिशा में एक सशक्त मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो शिक्षा को अधिक सार्थक, मानवीय और समाजोपयोगी बनाता है।

IX. ग्रामीण विकास और गांधीवादी शिक्षा

ग्रामीण भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना देश के समग्र विकास का आधार रही है, किन्तु लंबे समय तक ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, रोजगार और संसाधनों की कमी ने विकास की गति को प्रभावित किया है। इस संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा एक ऐसी दृष्टि प्रस्तुत करती है, जो ग्रामीण जीवन की आवश्यकताओं, संसाधनों और सामाजिक संरचना के अनुरूप शिक्षा को विकसित करने पर बल देती है। गांधी जी का मानना था कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है, इसलिए शिक्षा का स्वरूप भी ग्राम-केंद्रित होना चाहिए, ताकि ग्रामीण समाज का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

गांधीवादी शिक्षा का एक प्रमुख तत्व स्थानीयता पर आधारित शिक्षण है। इसमें शिक्षा को उस क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप बनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इससे विद्यार्थी अपने परिवेश को समझते हैं और उससे जुड़ी समस्याओं के समाधान खोजने की क्षमता विकसित करते हैं। इस प्रकार शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह जीवन के वास्तविक अनुभवों से जुड़ जाती है।

ग्रामीण विकास के संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान आत्मनिर्भरता की अवधारणा में देखा जा सकता है। गांधी जी चाहते थे कि ग्रामीण समुदाय अपने संसाधनों का उपयोग करके स्वयं के विकास की दिशा में अग्रसर हो। इसके लिए उन्होंने शिक्षा को उत्पादन और कौशल विकास से जोड़ने पर बल दिया। यदि ग्रामीण शिक्षा में कृषि, हस्तशिल्प, लघु उद्योग और अन्य स्थानीय व्यवसायों से संबंधित प्रशिक्षण को शामिल किया जाए, तो इससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सशक्त होगी। इस शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को अपने ही क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जिससे शहरों की ओर होने वाला पलायन भी कम किया जा सकता है। जब व्यक्ति अपने गाँव में ही आत्मनिर्भर बनता है, तो वह न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है, बल्कि पूरे समुदाय के विकास में भी योगदान देता है। इस प्रकार गांधीवादी शिक्षा ग्रामीण विकास को एक स्थायी और समावेशी दिशा प्रदान करती है।

गांधीवादी शिक्षा सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देती है। ग्रामीण समाज में अक्सर जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर असमानताएँ देखने को मिलती हैं। शिक्षा के माध्यम से इन असमानताओं को कम किया जा सकता है। गांधी जी ने शिक्षा को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने पर बल दिया और यह माना कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे सामाजिक न्याय और समानता स्थापित की जा सकती है। जब सभी को समान अवसर मिलते हैं, तो समाज में संतुलन और सामंजस्य की भावना विकसित होती है।

इसके अतिरिक्त, गांधीवादी शिक्षा पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संरक्षण की भावना को भी प्रोत्साहित करती है। ग्रामीण जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा होता है, इसलिए शिक्षा का स्वरूप भी ऐसा होना चाहिए जो पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को विकसित करे। स्थानीय संसाधनों का संतुलित उपयोग, जैविक खेती और प्राकृतिक जीवनशैली जैसे तत्व ग्रामीण शिक्षा का हिस्सा बन सकते हैं, जो सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

महिलाओं की भागीदारी भी ग्रामीण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है, और गांधीवादी शिक्षा इस दिशा में भी सहायक सिद्ध होती है। यदि ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान किए जाएँ, तो वे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बन सकती हैं। इससे परिवार और समाज दोनों के स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

X. वैश्वीकरण और डिजिटल युग में गांधीवादी शिक्षा

वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों और साधनों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि ऑनलाइन माध्यमों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से विश्व स्तर पर सुलभ हो गई है। इस परिवर्तन ने शिक्षा को अधिक सुलभ और गतिशील बनाया है, किन्तु इसके साथ अनेक नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे मानवीय मूल्यों का हास, अत्यधिक तकनीकी निर्भरता और शिक्षा का यांत्रिक स्वरूप। ऐसे परिदृश्य में गांधीवादी शिक्षा का दृष्टिकोण एक संतुलित और मानवीय मार्ग प्रस्तुत करता है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से शिक्षा का उद्देश्य अधिकतर आर्थिक प्रतिस्पर्धा और वैश्विक रोजगार बाजार के अनुरूप तैयार होने तक सीमित होता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा में मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के पहलुओं की उपेक्षा देखने को मिलती है। गांधीवादी शिक्षा इस प्रवृत्ति का संतुलन स्थापित करती है, क्योंकि यह व्यक्ति के समग्र विकास पर बल देती है, जिसमें नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्ष भी शामिल हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम न बनाकर सहयोग और सहअस्तित्व की भावना से जोड़ता है। डिजिटल युग में तकनीकी साधनों का उपयोग शिक्षा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। ऑनलाइन शिक्षण, वर्चुअल कक्षाएँ और डिजिटल संसाधन ज्ञान के प्रसार को सरल बनाते हैं। किन्तु इसके साथ यह चुनौती भी उत्पन्न होती है कि विद्यार्थी वास्तविक जीवन के अनुभवों और मानवीय संपर्क से दूर होते जा रहे हैं। गांधीवादी शिक्षा इस स्थिति में संतुलन स्थापित करने का मार्ग सुझाती है, जिसमें तकनीक का उपयोग तो किया जाए, किन्तु शिक्षा का मूल उद्देश्य मानवता, संवेदनशीलता और व्यवहारिकता से जुड़ा रहे।

गांधी जी ने सादगी, आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ संतुलन को जीवन का आधार माना। डिजिटल युग में जब उपभोक्तावाद और भौतिकवाद का प्रभाव बढ़ रहा है, तब यह दृष्टिकोण और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। शिक्षा के माध्यम से यदि विद्यार्थियों में सादगी, संयम और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जाए, तो वे तकनीकी साधनों का उपयोग संतुलित और सकारात्मक दिशा में कर सकते हैं। वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक विविधता और पहचान का संरक्षण भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण स्थानीय परंपराओं और मूल्यों का हास होने की संभावना रहती है। गांधीवादी शिक्षा इस संदर्भ में मातृभाषा और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण पर बल देती है, जिससे शिक्षा अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है और सांस्कृतिक संतुलन बना रहता है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में सूचना की अधिकता भी एक चुनौती है, जहाँ सही और गलत जानकारी के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। गांधीवादी शिक्षा में सत्य के सिद्धांत को केंद्रीय स्थान प्राप्त है, जो विद्यार्थियों को विवेकपूर्ण निर्णय लेने और सही जानकारी को पहचानने की क्षमता प्रदान करता है। इस प्रकार यह शिक्षा डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना करने में सहायक सिद्ध होती है। समकालीन शिक्षा में यह आवश्यक हो गया है कि तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। गांधीवादी शिक्षा इस संतुलन को संभव बनाती है, क्योंकि यह शिक्षा को केवल साधनों तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसके उद्देश्य को भी स्पष्ट करती है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को केवल तकनीकी रूप से सक्षम ही नहीं बनाता, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक के रूप में भी विकसित करता है।

XI. विश्लेषण एवं विवेचना

गांधीवादी शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों के उद्देश्यों, दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली में मौलिक अंतर विद्यमान है। एक ओर आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः प्रतिस्पर्धा, परीक्षा और रोजगार-केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है, वहीं दूसरी ओर गांधीवादी शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्र में रखती है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि दोनों दृष्टिकोणों का गहन विश्लेषण किया जाए, ताकि यह समझा जा सके कि वर्तमान परिस्थितियों में गांधीवादी शिक्षा किस प्रकार अधिक प्रासंगिक सिद्ध हो सकती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ज्ञान को अधिकतर सैद्धांतिक और परीक्षा-आधारित रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसके कारण विद्यार्थियों में व्यावहारिक समझ और जीवन कौशल का अभाव रह जाता है। इसके विपरीत गांधीवादी शिक्षा में कार्य-आधारित अधिगम को महत्व दिया गया है, जिससे विद्यार्थी सीखने के साथ-साथ जीवन के वास्तविक अनुभवों से भी जुड़ता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक प्रभावी और उपयोगी बनाता है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिकता और अनुभवात्मक अधिगम को समाविष्ट किया जाए, तो उसकी गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। गांधीवादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष नैतिकता और चरित्र निर्माण है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा में तकनीकी दक्षता और ज्ञानार्जन पर तो जोर दिया जाता है, किन्तु नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना के विकास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। इसके परिणामस्वरूप समाज में नैतिक संकट उत्पन्न हो रहा है। गांधीवादी दृष्टिकोण इस कमी को दूर करने में सक्षम है, क्योंकि यह शिक्षा को मूल्य-आधारित बनाता है और व्यक्ति के चरित्र को सुदृढ़ करता है।

व्यावहारिकता के स्तर पर गांधीवादी शिक्षा की सीमाओं पर भी विचार करना आवश्यक है। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में केवल पारंपरिक कार्य-आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं हो सकती, क्योंकि आज की दुनिया में उन्नत तकनीकी ज्ञान और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की भी आवश्यकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि गांधीवादी शिक्षा के सिद्धांतों को आधुनिक संदर्भ में पुनः व्याख्यायित किया जाए और उन्हें तकनीकी प्रगति के साथ समन्वित किया जाए। इस प्रकार एक ऐसा संतुलित मॉडल विकसित किया जा सकता है, जो परंपरा और आधुनिकता दोनों के गुणों को समाहित करता हो। नीति और व्यवहार के बीच अंतर भी एक महत्वपूर्ण विषय है, जो शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। कई बार शैक्षिक नीतियों में मूल्य-आधारित शिक्षा और समग्र विकास की बात तो की जाती है, किन्तु व्यवहार में परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण ही प्रमुख बना रहता है। गांधीवादी शिक्षा इस अंतर को कम करने का मार्ग सुझाती है, क्योंकि यह शिक्षा को जीवन के साथ जोड़ती है और उसे व्यावहारिक रूप में लागू करने पर बल देती है।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में भी गांधीवादी शिक्षा का विश्लेषण आवश्यक है। यह शिक्षा समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करने की बात करती है और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करती है। वर्तमान समय में जब असमानताएँ बढ़ रही हैं, तब यह दृष्टिकोण सामाजिक संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकता है। इस प्रकार गांधीवादी शैक्षिक दर्शन केवल एक आदर्शवादी दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि उसमें व्यावहारिकता और यथार्थता के तत्व भी निहित हैं। यद्यपि इसे पूरी तरह से वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लागू करना संभव नहीं हो सकता, किन्तु इसके प्रमुख सिद्धांतों को अपनाकर शिक्षा को अधिक संतुलित, मानवीय और प्रभावी बनाया जा सकता है। इस प्रकार गांधीवादी शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सुधार के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करती है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

XII. अपेक्षित सुझाव

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, मानवीय और जीवनोपयोगी बनाने के लिए आवश्यक है कि उसमें गांधीवादी शैक्षिक सिद्धांतों के अनुरूप सुधारात्मक कदम उठाए जाएँ। इन सुझावों का उद्देश्य शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर उसे समग्र विकास, नैतिकता और आत्मनिर्भरता से जोड़ना है, ताकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सके।

सबसे पहले, शिक्षा में मूल्य-आधारित दृष्टिकोण को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है। पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों और गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए, जो विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास करें। यह कार्य केवल सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के माध्यम से नहीं, बल्कि व्यावहारिक गतिविधियों, समूह कार्यों और सामुदायिक सहभागिता के द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। दूसरे, कार्य-आधारित शिक्षण को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। विद्यालयों में हस्तशिल्प, कृषि, लघु उद्योग और अन्य उत्पादक गतिविधियों को पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाए, ताकि विद्यार्थी सीखने के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल भी अर्जित कर सकें। इससे न केवल शिक्षा अधिक रोचक और उपयोगी बनेगी, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित होगी।

तीसरे, शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि नैतिक मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में तैयार किया जाना चाहिए। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मूल्य शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम और जीवन कौशल पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। जब शिक्षक स्वयं इन मूल्यों को अपनाते हैं, तभी वे विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से प्रेरित कर सकते हैं। चौथे, शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम तैयार किया जाए, ताकि शिक्षा अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बन सके। इससे विद्यार्थी अपने परिवेश को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे और स्थानीय समस्याओं के समाधान में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगे।

पाँचवें, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के विस्तार और गुणवत्ता सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। वहाँ आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षित शिक्षकों और आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, ताकि ग्रामीण विद्यार्थियों को भी समान अवसर प्राप्त हो सकें। इसके साथ ही कौशल विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देकर ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए। छठे, शिक्षा में तकनीक के उपयोग को संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाया जाना चाहिए। डिजिटल साधनों का उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किया जाए, किन्तु इसके साथ मानवीय मूल्यों और व्यवहारिक अनुभवों का संतुलन बनाए रखना भी आवश्यक है। तकनीक को साधन के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए, न कि शिक्षा का उद्देश्य बनाया जाना चाहिए। सातवें, शिक्षा में समावेशिता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिल सकें। आर्थिक, सामाजिक या लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव समाप्त कर शिक्षा को सर्वसुलभ बनाया जाना चाहिए। इसके लिए विशेष योजनाओं और नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिए, जो वंचित वर्गों को शिक्षा से जोड़ने में सहायक हों।

अंततः, नीति-निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षा संबंधी नीतियाँ केवल कागजों तक सीमित न रहें, बल्कि उनका प्रभावी क्रियान्वयन भी हो। शिक्षा को जीवन से जोड़ने, नैतिकता को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भरता को विकसित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ, जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक सार्थक और समाजोपयोगी बन सके।

समग्र रूप से ये सुझाव शिक्षा को गांधीवादी दृष्टिकोण के अनुरूप पुनर्गठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकते हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों के समग्र विकास में सहायक होंगे।

XIII. निष्कर्ष

महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन केवल ऐतिहासिक या सैद्धांतिक अवधारणा भर नहीं है, बल्कि वर्तमान समय की शिक्षा संबंधी चुनौतियों के समाधान हेतु एक सशक्त और प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। गांधीवादी शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास, नैतिकता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्र में रखती है, जो आज की शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं के अनुरूप है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जहाँ ज्ञान को अधिकतर परीक्षा, अंक और रोजगार से जोड़कर देखा जाता है, वहीं गांधीवादी दृष्टिकोण शिक्षा को जीवन निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है। यह शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे व्यावहारिक, नैतिक और सामाजिक आयामों से भी जोड़ता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यदि शिक्षा को अधिक सार्थक और प्रभावी बनाना है, तो उसमें गांधीवादी सिद्धांतों का समावेश आवश्यक है।

गांधीवादी शिक्षा का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि शिक्षा को जीवन से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। जब शिक्षा व्यावहारिक अनुभवों, श्रम और सामाजिक सहभागिता के साथ जुड़ती है, तब वह अधिक उपयोगी और स्थायी बनती है। इसके साथ ही नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना भी आवश्यक है, ताकि समाज में संतुलन और समन्वय स्थापित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, आत्मनिर्भरता और कौशल विकास पर आधारित शिक्षा आज के समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल व्यक्ति को सक्षम बनाती है, बल्कि समाज के आर्थिक विकास में भी योगदान देती है। गांधीवादी शिक्षा का यह पक्ष वर्तमान समय की रोजगार संबंधी चुनौतियों के समाधान में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो गांधीवादी शैक्षिक दर्शन एक संतुलित, मानवीय और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न बनाकर जीवन और समाज के विकास का साधन बनाता है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में सुधार और पुनर्संरचना की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, गांधीवादी विचार एक मार्गदर्शक के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि गांधी जी का शैक्षिक दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में था, और इसके सिद्धांतों को अपनाकर शिक्षा को अधिक समावेशी, उपयोगी और मानवीय बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. गांधी, मोहनदास करमचंद. (2009). मेरे सत्य के प्रयोग. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. गांधी, मोहनदास करमचंद. (2007). हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
3. गांधी, मोहनदास करमचंद. (2010). बुनियादी शिक्षा. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
4. कुमार, कृष्ण. (2014). शिक्षा और समाज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
6. पाण्डेय, रामशंकर. (2015). भारतीय शिक्षा का इतिहास. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. सिंह, बी. एन. (2013). शिक्षा दर्शन. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
8. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शिक्षा के दार्शनिक आधार. विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. चतुर्वेदी, आर. (2016). भारतीय शिक्षा के मूल तत्व. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
10. तिवारी, एस. (2011). महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. नई दिल्ली।
12. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली।
13. यशपाल समिति. (2009). शिक्षा पर पुनर्विचार रिपोर्ट. नई दिल्ली।
14. मिश्रा, एस. (2018). आधुनिक शिक्षा और गांधीवादी विचार. नई दिल्ली: अटल प्रकाशन।
15. त्रिपाठी, वी. (2017). गांधी और शिक्षा. वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन।
16. जैन, पी. (2019). गांधीवादी शिक्षा का पुनर्मूल्यांकन. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
17. वर्मा, के. (2016). भारतीय शिक्षा और नैतिकता. नई दिल्ली: दीप एंड दीप प्रकाशन।
18. सक्सेना, ए. (2015). शिक्षा और मूल्य. नई दिल्ली: अर्पण प्रकाशन।
19. सिंह, आर. (2020). ग्रामीण शिक्षा और विकास. जयपुर: पंचशील प्रकाशन।

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 8.152